नमाज़ें बेअसर क्यों हो गईं?

मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी

अनुवादक

डा० कौसर यज़दानी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
(अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है)

नमाज़ें बेअसर क्यों हो गईं ?

मुसलमान भाइयो ! आज के ख़ुतबे में मुझे आपको यह बताना है कि जिस नमाज़ के इतने ज़्यादा फ़ायदे मैंने कई ख़ुतबों में लगातार आपके सामने बयान किए हैं, वह अब क्यों वे फ़ायदे नहीं दे रही है ? क्या बात है कि आप नमाज़ें पढ़ते हैं और फिर भी आपकी ज़िन्दगी नहीं सुधरती ? फिर भी आपके अख़लाक़ पाकीज़ा नहीं होते ? फिर भी आप एक ज़बरदस्त ख़ुदाई फ़ौज नहीं बनते ? फिर भी बातिलपरस्त आप पर ग़ालिब हैं ? फिर भी आप दुनिया में तबाह हाल और बुरी दशा में हैं ।

इस सवाल का मुख़तसर जवाब तो यह हो सकता है कि अव्वल तो आप नमाज़ पढ़ते ही नहीं और पढ़ते भी हैं, तो उस तरीक़े से नहीं, जो ख़ुदा और रसूल (सल्ल०) ने बताया है । इसी लिए इन फ़ायदों की उम्मीद आप नहीं कर सकते जो मोमिन को मेराजे कमाल तक पहुँचानेवाली नमाज़ से पहुँचने चाहिएँ । लेकिन मैं जानता हूँ कि सिर्फ़ इतना-सा जवाब आपको मुतमइन नहीं कर सकता । इसलिए ज़रा तफ़सील के साथ आपको यह बात समझाऊँगा ।

किसी घड़ी को ले लीजिए, आपको नज़र आएगा कि इसमें बहुत से पुर्ज़े एक-दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं, जब इसको कूक (चाबी) दी जाती है तो सब पुर्ज़े अपना-अपना काम शुरू कर देते हैं और इनके हरकत करने के साथ ही बाहर के सफ़ेद तख़्ते (डायल) पर उनकी हरकत का नतीजा ज़ाहिर होना शुरू हो जाता है, यानी घड़ी की सुइयाँ चलकर एक-एक सेकेण्ड और एक-एक मिनट बताने लगती हैं । अब आप ज़रा ग़ौर से देखिए । घड़ी बनाने का मक़सद यह है कि वह सही वक़्त बताए । इसी मक़सद के लिए उसकी मशीन में वे सब पुर्ज़े इकट्ठा किए गए जो सही वक़्त बताने के लिए ज़रूरी थे । फिर इन सबको इस तरह जोड़ा गया कि सब मिलकर बाक़ायदा हरकत करें और हर पुर्ज़ा वही काम और उतना ही काम करता चला जाए जितना सही वक़्त बताने के लिए उसको करना चाहिए । फिर कूक देने का क़ायदा मुक़र्रर किया गया, ताकि उन पुर्ज़ों को ठहरने न दिया जाए और थोड़ी-थोड़ी मुद्दत के बाद इनको हरकत दी जाती रहे । इसी तरह जब तमाम पुर्ज़ों को ठीक-ठीक जोड़ा गया और कूक दी गई तब कहीं यह घड़ी इस क़ाबिल हुई कि वह उस मक़सद को पूरा करे, जिसके लिए यह बनाई गई है । अगर आप इसे कूक न दें तो यह वक़्त नहीं बताएगी । अगर आप कूक दें; लेकिन उस क़ायदे के मुताबिक़

न दें जो कूक देने के लिए मुक़र्रर किया गया है तो यह बन्द हो जाएगी या चलेगी भी तो सही वक़्त न बताएगी । अगर आप इसके कुछ पुर्ज़े निकाल डालें और फिर कूक दें, तो इस कूक से कुछ हासिल न होगा । अगर आप इसके कुछ पुर्ज़ों को निकालकर इसकी जगह सिंगर सिलाई मशीन के पुर्ज़े लगा दें और फिर कूक दें तो यह न वक़्त बताएगी और न कपड़ा सिएगी । अगर आप इसके सारे पुर्ज़े इसके अन्दर ही रहने दें लेकिन उनको खोलकर एक-दूसरे से अलग कर दें तो कूक देने से कोई पुर्ज़ा भी हरकत न करेगा । कहने को सारे पुर्ज़े उसके अन्दर मौजूद होंगे; मगर सिर्फ़ पुर्ज़ों के मौजूद रहने से वह मक़सद हासिल न होगा, जिसके लिए घड़ी बनाई गई है । क्योंकि उनकी तरतीब और उनका आपस का ताल्लुक़ आपने तोड़ दिया है जिसके कारण वे मिलकर हरकत नहीं कर सकते । ये सब सूरतें जो मैंने आपसे बयान की हैं, उनमें अगरचे घड़ी का होना और उसको कूक देने का काम दोनों बेकार हो जाते हैं, लेकिन दूर से देखनेवाला यह नहीं कह सकता कि यह घड़ी नहीं है या आप कूक नहीं दे रहे हैं । वह तो यही कहेगा कि सूरत तो बिलकुल घड़ी जैसी है और यही उम्मीद करेगा कि घड़ी का जो फ़ायदा है, वह इससे हासिल होना चाहिए । इसी तरह दूर से जब वह आपको कूक देते हुए देखेगा तो यही समझेगा कि आप वाक़ई घड़ी को कूक दे रहे है और वह यही उम्मीद करेगा कि घड़ी को कूक देने का जो नतीजा है वह ज़ाहिर होना चाहिए । लेकिन यह उम्मीद पूरी कैसे हो सकती है, जबकि यह घड़ी बस दूर से देखने ही की घड़ी है और हक़ीक़त में इसके अन्दर घड़ीपन बाक़ी नहीं रहा है । यह मिसाल जो मैंने आपके सामने बयान की है इससे आप सारा मामला समझ सकते हैं । इस्लाम को यही घड़ी मान लीजिए । जिस तरह घड़ी का मक़सद सही वक़्त बताना है, उसी तरह इस्लाम का मक़सद यह है कि ज़मीन में आप ख़ुदा के ख़लीफ़ा, लोगों पर ख़ुदा के गवाह और दुनिया में दावते हक़ के अलम्बरदार बनकर रहें, ख़ुद ख़ुदा के हुक्म पर चलें और सबको ख़ुदा के क़ानून का ताबेदार बनाकर रखें । इस मक़सद को साफ़तौर पर क़ुरआन में बयान कर दिया गया है—

> "तुम वह बेहतरीन उम्मत हो जिसे लोगों के लिए निकाला गया है । तुम्हारा काम यह है कि सब लोगों को नेकी का हुक्म दो और बुराई से रोको और अल्लाह पर ईमान रखो ।" (3:110)
>
> "और इस तरह हमने तुमको बेहतरीन उम्मत बनाया है, ताकि तुम लोगों पर गवाह हो ।" (2:143)
>
> "अल्लाह ने वादा किया है उन लोगों से जो तुम में से ईमान लाएँ और नेक अमल करें कि वह ज़रूर उनको ज़मीन में अपना ख़लीफ़ा बनाएगा ।" (24:55)

इस मक़सद को पूरा करने के लिए घड़ी के पुर्ज़ों की तरह इस्लाम में भी ये तमाम पुर्ज़े इकट्ठा किए गए हैं जो इस ग़रज़ के लिए ज़रूरी और मुनासिब थे। दीन के अक़ीदे, अख़लाक़ के उसूल, मामलों के क़ायदे, ख़ुदा के हुक़ूक़, बन्दों के हुक़ूक़, ख़ुद अपने नफ़्स के हुक़ूक़, दुनिया की हर उस चीज़ के हुक़ूक़, जिससे आपका वास्ता पेश आता है, कमाने के क़ायदे और ख़र्च करने के तरीक़े, जंग के क़ानून और सुलह के क़ायदे, हुकूमत करने के क़ानून और इस्लामी हुकूमत की इताअत करने के ढंग, ये सब इस्लाम के पुर्ज़े हैं और उनको घड़ी के पुर्ज़ों की तरह एक ऐसी तरतीब से एक-दूसरे के साथ कसा गया है कि ज्यों ही उसमें कूक दी जाए, हर पुर्ज़ा दूसरे पुर्ज़ों के साथ मिलकर हरकत करने लगे और उन सबकी हरकत से असल नतीजा यानी इस्लाम का ग़लबा और दुनिया पर ख़ुदाई क़ानून की बालातरी इस तरह लगातार ज़ाहिर होना शुरू हो जाए जिस तरह कि आप एक घड़ी को देखते हैं कि उसके पुर्ज़ों की हरकत के साथ ही बाहर के सफ़ेद तख़्ते पर नतीजा बराबर ज़ाहिर होता चला जाता है। घड़ी में पुर्ज़ों को एक-दूसरे के साथ बाँधे रखने के लिए कुछ कीलें और पत्तियाँ लगाई गई हैं। इसी तरह इस्लाम के तमाम पुर्ज़ों को एक-दूसरे के साथ जुड़ा रखने और उनकी सही तरकीब क़ायम रखने के लिए वह चीज़ रखी गई है जिसको निज़ामे जमाअत कहा जाता है। यानी मुसलमानों का एक ऐसा सरदार जो दीन का सही इल्म और तक़वे और परहेज़गारी की सिफ़त रखता हो। जमाअत के दिमाग़ मिलकर उसकी मदद करें। जमाअत के हाथ-पाँव उसके कहने पर चलें। इन सबकी ताक़त से वह इस्लाम के क़ानूनों को लागू करे और लोगों को उनके ख़िलाफ़ चलने से रोके। इस तरीक़े से जब सारे पुर्ज़े एक-दूसरे से जुड़ जाएँ और उनकी तरतीब ठीक-ठीक क़ायम हो जाए तो उनको हरकत देने और देते रहने के लिए कूक की ज़रूरत होती है और वही कूक यह नमाज़ है जो हर रोज़ पाँच वक़्त पढ़ी जाती है। फिर इस घड़ी को साफ़ करते रहने की भी ज़रूरत होती है और वह सफ़ाई ये रोज़े हैं जो साल भर में तीस दिन रखे जाते हैं और उस घड़ी को तेल देते रहने की भी ज़रूरत है। तो ज़कात वह तेल है जो साल भर में एक बार उसके पुर्ज़ों को दिया जाता है। यह तेल कहीं बाहर से नहीं आता, बल्कि इसी घड़ी के कुछ पुर्ज़े तेल भी बनाते हैं और कुछ सूखे हुए पुर्ज़ों को रोग़नदार करके आसानी के साथ चलने के क़ाबिल बना देते हैं, फिर इसे कभी-कभी ओवर हालिंग (Over Hauling) करने की भी ज़रूरत होती है, सो वह ओवर हालिंग हज है जो उम्र में एक बार करना ज़रूरी है और इससे अधिक जितना किया जा सके, उतना ही अच्छा है।

अब आप ग़ौर कीजिए कि यह कूक देना, सफ़ाई करना तेल देना और ओवर हाल करना उसी वक़्त तो फ़ायदेमंद हो सकता है जब फ़्रेम में उसी घड़ी के सारे

पुर्ज़े मौजूद हों । एक-दूसरे के साथ उसी तरतीब से जुड़े हुए हों जिस तरतीब से घड़ीसाज़ ने उन्हें जोड़ा था और ऐसे तैयार रहें कि कूक देते ही अपनी मुक़र्ररा हरकत करने लगें और हरकत करते ही नतीजा दिखाने लगें । लेकिन यहाँ मामला ही कुछ दूसरा हो गया है । एक तो जमाअत का वह निज़ाम ही बाक़ी नहीं रहा जिससे इस घड़ी के पुर्ज़ों को बाँधा गया था। नतीजा यह हुआ कि सारे पेंच ढीले पड़ गए और पुर्ज़ा-पुर्ज़ा अलग होकर बिखर गया। अब जो, जिसके जी में आता है करता है; कोई पूछनेवाला ही नहीं, हर आदमी आज़ाद है, उसका दिल चाहे तो इस्लाम के क़ानूनों की पैरवी करे और न चाहे तो न करे । इस पर भी आप लोगों का दिल ठण्डा न हुआ तो आपने इस घड़ी के बहुत-से पुर्ज़े निकाल डाले और उसकी जगह पर हर शख़्स ने अपनी-अपनी पसन्द के मुताबिक़ जिस दूसरी मशीन का पुर्ज़ा चाहा उसमें लाकर फिट कर दिया । कोई साहब सिंगर मशीन का पुर्ज़ा पसन्द करके ले आए, किसी साहब को आटा पीसने की चक्की का कोई पुर्ज़ा पसन्द आ गया तो वह उसे उठा लाए और किसी साहब को मोटर लारी की कोई चीज़ पसन्द आई तो उसे लाकर उस घड़ी में लगा दिया । अब आप मुसलमान भी हैं और बैंक से सूदी करोबार भी चल रहा है, इन्शोरेन्स कम्पनी में बीमा भी करा रखा है, ग़ैरशरई अदालतों में झूठे मुक़दमें भी लड़ रहे हैं, बातिल और बातिलपरस्तों की वफ़ादाराना ख़िदमत भी हो रही है। बेटियों, बहनों और बीवियों को मेम साहब भी बनाया जा रहा है, बच्चों को माद्दापरस्ताना (भौतिकता पर आधारित) तालीम भी दी जा रही है, नेताओं की अन्धी पैरवी भी हो रही है और लेनिन के राग भी गाए जा रहे हैं । ग़रज़ यह कि कोई ग़ैरइस्लामी चीज़ ऐसी नहीं जिसे हमारे मुसलमान भाइयों ने ला-लाकर इस्लाम की इस घड़ी के फ्रेम में ठूँस न दिया हो । ज़माने की चलती हुई हर तहरीक को लपककर क़बूल कर लिया जाता है और इस्लाम में उसका पैवन्द लगाया जाता है ।

ये सब हरकतें करने के बाद आप चाहते हैं कि कूक देने से यह घड़ी चले और वही नतीजा दिखाए, जिसके लिए इस घड़ी को बनाया गया था और सफ़ाई करने, तेल देने और ओवरहाल करने के वही फ़ायदे हों जो इन कामों के लिए मुक़र्ररर हैं । मगर ज़रा अक़्ल से आप काम लें तो आसानी से आप समझ सकते हैं कि जो हाल आपने इस घड़ी का कर दिया है, उसमें तो ज़िन्दगी भर कूक देने और सफ़ाई करने और तेल देते रहने से भी कुछ नतीजा नहीं निकल सकता, जबतक कि आप बाहर से आए हुए सारे पुर्ज़ों को निकालकर उसके असली पुर्ज़े उसमें न रखेंगे और फिर इन पुर्ज़ों को उसी तरतीब के साथ जोड़कर कस न देंगे, जिस तरह शुरू में उन्हें जोड़ा और कसा गया था, आप हरगिज़ उन नतीजों की उम्मीद नहीं कर सकते जो इससे कभी ज़ाहिर हुए थे ।

ख़ूब समझ लीजिए कि यही असली वजह है आपकी नमाज़ों और रोज़ों और ज़कात और हज के बेनतीजा हो जाने की । एक तो आपमें से नमाज़ें पढ़नेवाले रोज़े रखनेवाले ज़कात और हज अदा करनेवाले हैं ही कितने ? जमाअत का निज़ाम बिखर जाने से हर आदमी बिलकुल आज़ाद हो गया है, भले ही वह इन फ़र्ज़ों को अदा करे या न करे कोई पूछनेवाला ही नहीं। फिर जो लोग इन्हें अदा करते हैं वे भी किस तरह अदा करते हैं ? नमाज़ में जमाअत की पाबन्दी नहीं और अगर कहीं जमाअत की पाबन्दी है भी तो मस्जिदों की इमामत के लिए उन लोगों को चुना जाता है जो दुनिया में किसी और काम के क़ाबिल नहीं होते । आप नाअहल लोगों को उस नमाज़ का इमाम बनाते हैं जो आपको ख़ुदा का ख़लीफ़ा और दुनिया में ख़ुदाई फ़ौजदार बनाने के लिए मुक़र्रर की गई थी । इसी तरह रोज़े, ज़कात और हज का जो हाल है वह भी बयान करने के क़ाबिल नहीं । इन सब बातों के होते हुए भी आप कह सकते हैं कि अब भी बहुत-से मुसलमान अपने दीनी फ़र्ज़ों को पूरा करनेवाले ज़रूर हैं, लेकिन जैसाकि मैं बयान कर चुका हूँ कि घड़ी का पुर्ज़ा-पुर्ज़ा अलग करके और उसमें बाहर की बीसियों चीज़ें दाख़िल करके आपका कूक देना और न देना, सफ़ाई करना और न करना, तेल देना और न देना दोनों बेनतीजा हैं । आपको यह घड़ी दूर से घड़ी ही नज़र आती है । देखनेवाला यही कहता है कि यह इस्लाम है और आप मुसलमान हैं । आप जब इस घड़ी को कूक देते और सफ़ाई करते हैं तो दूर से देखनेवाला यही समझता है कि सचमुच आप कूक दे रहे हैं और सफ़ाई कर रहे हैं । कोई यह नहीं कह सकता कि यह नमाज़, नमाज़ नहीं है, या ये रोज़े रोज़े नहीं हैं, मगर देखनेवालों को क्या ख़बर कि इस ज़ाहिरी फ्रेम के अन्दर क्या कुछ कारस्तानियाँ की गई हैं ।

मुसलमान भाइयो ! मैंने आपको असली वजह बता दी है कि आपके यह मज़हबी आमाल क्यों बेनतीजा हो रहे हैं ? और क्या वजह है कि नमाज़ें पढ़ने और रोज़े रखने के बाद भी आप ख़ुदाई फ़ौजदार बनने के बजाए बातिल से मग़लूब और हर ज़ालिम का निशाना बने हुए हैं । लेकिन अगर आप बुरा न मानें तो मैं आपको इससे भी ज़्यादा अफ़सोसनाक बात बताऊँ । आपको अपनी इस हालत का रंज और अपनी मुसीबत का एहसास तो ज़रूर है, मगर आपके अन्दर हज़ार में से नौ सौ निन्यानवे, बल्कि इससे भी ज़्यादा लोग ऐसे हैं जो इस हालत को बदलने की सही सूरत के लिए राज़ी नहीं हैं । वे इस्लाम की इस घड़ी को जिसका पुर्ज़ा-पुर्ज़ा अन्दर से अलग कर दिया गया है और जिसमें अपनी-अपनी पसन्द के मुताबिक़ हर शख़्स ने कोई न कोई चीज़ मिला रखी है, फिर से तरतीब देना बर्दाश्त नहीं कर सकते, क्योंकि जब उसमें से बाहरी चीज़ें निकाल ली जाएँगी तो लाज़िमी तौर पर हर एक की पसन्द की चीज़ निकाली जाएगी । यह नहीं हो सकता कि दूसरों

की पसन्द की चीज़ें तो निकाल दी जाएँ, मगर आपने ख़ुद बाहर का जो पुर्ज़ा लाकर लगा रखा है उसे रहने दिया जाए । इसी तरह जब उसे कसा जाएगा तो सभी उसके साथ कसे जाएँगे और यह ऐसी मशक़्क़त है जिसे ख़ुशी-ख़ुशी सह लेना बड़ा ही कठिन है । इसलिए वे बस यह चाहते हैं कि यह घड़ी इसी हाल में दीवार की शोभा बनी रहे और दूर से ला-लाकर लोगों को इसका दर्शन कराया जाए और उन्हें बताया जाए कि इस घड़ी में ऐसी और ऐसी करामातें छिपी हुई हैं । इससे बढ़कर जो लोग कुछ ज़्यादा इस घड़ी से मुहब्बत करते हैं, वे चाहते हैं कि इसी हालत में इसको ख़ूब दिल लगा-लगाकर कूक दी जाए और बड़ी मेहनत से इसकी सफ़ाई की जाए । मगर किसी हाल में भी इसके पुर्ज़ों को तरतीब देने कसने और बाहरी पुर्ज़ों को निकाल फेंकने का इरादा तक न किया जाए ।

क्या अच्छा होता कि मैं आपकी हाँ में हाँ मिला सकता । मगर मैं क्या करूँ कि जो कुछ मैं जानता हूँ उसके ख़िलाफ़ नहीं कह सकता । मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि जिस हालत में आप इस वक़्त हैं, उसमें पाँच वक़्त की नामज़ों के साथ तहज्जुद और इशराक़ और चाश्त भी आप पढ़ने लगें और पाँच-पाँच घण्टे रोज़ाना क़ुरआन भी पढ़ें और रमज़ान शरीफ़ के अलावा ग्यारह महीनों में साढ़े पाँच महीनों के और अधिक रोज़े भी रख लिया करें तब भी कुछ हासिल न होगा । घड़ी के अन्दर उसके असली पुर्ज़े रखें हों और उन्हें कस दिया जाए, तब तो ज़रा-सी कूक भी उसको चला देगी । थोड़ा-सा साफ़ करना और ज़रा-सा तेल देना भी नतीजाबख़्श होगा, वरना ज़िन्दगी भर कूक देते रहिए, घड़ी न चलती है, न चलेगी ।

"और हमारा काम सिर्फ़ सही बात पहुँचा देना है ।" (क़ुरआन—36:17)

★★★★★